

The Gazette



of India

EXTRAORDINARY

PART I—Section 1

PUBLISHED BY AUTHORITY

No. 199] NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 14, 1962/KARTIKA 23, 1884

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of International Trade)

NOTIFICATION

TARIFFS

New Delhi, the 14th November 1962

No. 2(1)-T.R. 62.—Whereas the Central Government is satisfied, after due inquiry, that the duty chargeable under the First Schedule to the Indian Tariff Act, 1934 (32 of 1934), as in force in India and as applied to the State of Pondicherry in respect of the articles specified in item No. 28(20) of the said Schedule, and characterised as protective in the third column thereof, has become excessive for the purpose of securing the protection intended to be afforded by it to similar articles manufactured in India;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the said Act, the Central Government hereby reduces with effect from the 14th November, 1962, the duty of customs on the said articles so that the duty chargeable thereon shall from the said date be as specified against each of the said articles in column 3 of the table annexed hereto.

THE TABLE.

Item No. of Tariff	Name of Article	Rate of duty
1	2	3
28(20)	(a) Acid Oleic or any product containing 70 per cent or more of free liquid fatty acids.	50 per cent <i>ad valorem</i> .
	(b) Any product manufactured from (a) and containing 70 per cent or more of combined liquid fatty acids.	50 per cent <i>ad valorem</i> .
	(c) Acid Stearic or any product containing 70 per cent or more of free solid fatty acids.	50 per cent <i>ad valorem</i> .
	(d) Any product manufactured from (c) and containing 70 per cent or more of combined solid fatty acids.	50 per cent <i>ad valorem</i> .
	(e) Mixture of (a) and (c) above containing 70 per cent or more of free fatty acids.	50 per cent <i>ad valorem</i> .

(Department of International Trade)

RESOLUTION

TARIFFS

New Delhi, the 14th November 1962

No. 2(1)-T.R./62.—The Tariff Commission has submitted its Report on the continuance or otherwise of protection to the Stearic Acid and Oleic Acid Industry on the basis of an inquiry undertaken by it under Sections 11(e) and 13 of the Tariff Commission Act, 1951 (50 of 1951). Its recommendations are as follows:—

- (1) Protection to the stearic and oleic acids industry need not be continued beyond expiry of the present term (i.e. beyond 31st December 1962).
- (2) On the withdrawal of protection to the stearic and oleic acids industry, necessary steps should be taken to keep a careful watch over the future trend of prices of the indigenous products.
- (3) Since it is not possible to manufacture all the grades of stearic and oleic acid solely from indigenous raw materials, existing facilities for the import of tallow and palm oil should be continued.
- (4) Producers of stearic acid and cosmetic manufacturers, in their mutual interest, may consider the desirability of getting the I.S.I. to lay down standard specifications for the cosmetic grade of stearic acid.
- (5) The attention of producers is drawn to the complaints about the quality of oleic acid for taking necessary remedial action.

2. Government accept recommendation (1) and the necessary legislation will be undertaken in due course to de-protect the Stearic Acid and Oleic Acid Industry with effect from the 1st January, 1963.

3. Government have taken note of recommendations (2) and (3) and steps will be taken to implement them as far as possible.

4. The attention of the manufacturers of Stearic Acid and Oleic Acid is invited to recommendations (4) and (5).

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be published in the Gazette of India.

C. S. RAMACHANDHAN, Jt. Secy.

प्रतिष्ठित सभा उद्योग संस्थान

(अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभाग)

प्रवृत्ति

प्रभारवलि

नई दिल्ली, 14 नवम्बर, 1962

सं० 2(1)-टी० आर०/62.—चूँकि केन्द्रीय सरकार का, सम्यक् जांच पड़ताल के बाद, इस बात की बाबत समाधान हो गया है कि भारत में यथाप्रवृत्त और पाण्डिचेरी राज्य पर यथाप्रयुक्त भारतीय प्रभारवलि अधिनियम, 1934 (1934 का 32) की प्रथम अनुसूची के अधीन जो शुल्क उक्त अनुसूची की मद संख्या 28(20) में उल्लिखित चीजों के विषय में प्रभावी है और जिसे उसके तीसरे स्तम्भ में संरक्षणात्मक कहा गया है, वह शुल्क उस संरक्षण को प्राप्त करने के प्रयोजन से जो भारत में अभिनिर्मित इसी प्रकार की चीजों को इस से प्राप्त होना आशयित है, अत्यधिक हो गया है।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा 14 नवम्बर, 1962 से उक्त चीजों पर सीमा शुल्क को अब इसलिए कम करती है कि उन पर प्रभार्य शुल्क उक्त तारीख से वही हो जाये जो इस से उगाबद्ध सारणी के स्तम्भ 3 में उक्त चीजों में से प्रत्येक के सामने उल्लिखित है।

सारणी

प्रभारावलि की मद संख्या	चीज का नाम	शुल्क की दर
1	2	3
28(20)	(क) प्रोलीक एसिड या कोई ऐसा उत्पाद जिसमें 70 प्रतिशत या इससे अधिक असंयोजित तरल वसायुक्त तेजाब है।	50 प्रतिशत मूल्यानुसार
	(ख) ऊपर (क) से अभिनिर्मित कोई उत्पाद और जिसमें 70 प्रतिशत या इससे अधिक मिश्रित तरल वसायुक्त तेजाब है।	50 प्रतिशत मूल्यानुसार
	(ग) स्टीरिक एसिड या कोई ऐसा उत्पाद जिसमें 70 प्रतिशत या इससे अधिक असंयोजित ठोस वसायुक्त तेजाब है।	50 प्रतिशत मूल्यानुसार
	(घ) ऊपर (ग) से अभिनिर्मित कोई उत्पाद और जिसमें 70 प्रतिशत या इससे अधिक मिश्रित ठोस वसायुक्त तेजाब है।	50 प्रतिशत मूल्यानुसार
	(ङ) ऊपर (क) और (ग) का मिश्रण जिसमें 70 प्रतिशत या इससे अधिक असंयोजित वसायुक्त तेजाब है।	50 प्रतिशत मूल्यानुसार

(अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विभाग)

नई दिल्ली, ता० १४-११-१९६२

संकल्प

प्रभारावलि

सं० 2(1)-डी० चार०/62—प्रभारावलि आयोग ने प्रभारावलि आयोग अधिनियम, 1951 (1951 का 50) की धारा 11(ङ) और 13 के अधीन जांच के आधार पर स्टीरिक एसिड और प्रोलीक एसिड उद्योगों की संरक्षा जारी रखने अथवा न रखने के बारे में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया है। इस को सिकारिखें इस प्रकार हैं :—

- (1) स्टीरिक एसिड और प्रोलीक एसिड उद्योगों की संरक्षा वर्तमान अवधि (अर्थात् 31-12-1962) से आगे जारी रखने की आवश्यकता नहीं है।
- (2) स्टीरिक एसिड और प्रोलीक एसिड उद्योगों पर से संरक्षा हटाने के बाद, देशी उत्पादों के मूल्यों के भावी स्तरों पर सावधानी से ध्यान देते रहने के सिद्धि आवश्यक उपाय किये जाने चाहियें।

- (3) चूँकि स्टीरिक और ओलीक एसिड के सभी ग्रेडों का अभিনিर्माण केवल कच्चे मालों से ही सम्भव नहीं है अतः वसा और पाम के तेल के आयात की विद्यमान सुविधाओं को जारी रखा जाना चाहिये ।
- (4) स्टीरिक एसिड के उत्पादक और कांतिद्रव्य अभিনিर्माता अपने हित में स्टीरिक एसिड को कांतिद्रव्य ग्रेड के लिये भारतीय मानक संस्था द्वारा मानक विशिष्टियाँ निर्धारित करवाने की वांछनीयता पर विचार कर सकते हैं ।
- (5) ओलीक एसिड की किस्म के बारे में प्राप्त शिकायतों की ओर उत्पादकों का ध्यान इस दृष्टि से आकर्षित किया जाता है कि वे उन के दूर करने के लिये आवश्यक कार्यवाई करें ।

2. सरकार सिफारिश (1) को स्वीकार करती है और 1 जनवरी, 1963 से स्टीरिक एसिड और ओलीक एसिड उद्योगों से संरक्षा हटाने के लिये यथासमय आवश्यक विधायन बनाया जाएगा ।

3. सरकार ने सिफारिश (2) और (3) पर भी ध्यान दिया है और जहाँ तक सम्भव हो सकेगा उन्हें कार्यान्वित करने के लिये उपाय किये जायेंगे ।

4. स्टीरिक एसिड और ओलीक एसिड के अभিনিर्माताओं का ध्यान सिफारिश (4) और (5) की ओर आकर्षित किया जा रहा है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति सभी सम्बद्ध व्यक्तियों/संस्थाओं को दे दी जाय और इसे भारत के गजट में प्रकाशित कर दिया जाय ।

सी • एस • रामचन्द्रन,
संयुक्त सचिव, भारत सरकार ।